ISSN No. :2456-2645

ACADEMIC SOCIAL RESEARCH

(An International Research Journal)

(UGC Approved-47715)

Vol.3 (October to December,2017)
Part -IV

Scanned by CamScanner

ISSN No. 2456-2645

वैश्वीकरण एवं शिक्षा

डॉ. आभा सिंह
सहायक आचार्या–शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनू–राजस्थान

शोध–सारांश

आज जो विभिन्न राष्ट्रों में क्रिया प्रतिक्रिया हो रही है, वह अन्य सभी राष्ट्रों को एक–दूसरे के करीब ला रही है तथा यह भौगोलिक सीमा को पार कर रहे हैं। आज वैश्वीकरण का युग है। देश–विदेश के बीच की सीमा गायब होती जा रही है और पूरा संसार एक गांव सा प्रतीत हो रहा है। आज समाज में होने वाली सभी गतिविधियों को वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा जा रहा है। वैश्वीकरण का उद्देश्य राष्ट्रीय सरहदों को पार कर सम्पूर्ण विश्व को एकीकृत करना है। एक वक्त था जब वैश्वीकरण की संकल्पना को आर्थिक विश्लेशण के बढ़ते हुए वैश्विक महत्व, विश्व स्तर पर बढ़ते हुए आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता था। बाद में इसमें और भी कई पहलू शामिल हो गए जैसे अन्तर्राष्ट्रीय निगम, तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग, सांस्कृतिक सहयोग, स्थानान्तरण एवं शरणार्थी समस्या तथा अमीर–गरीब देशों के संबंध आदि। निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का प्रभावशाली यंत्र है। पुरातन समय से ही शिक्षा समाज हेतु उत्तम नागरिकों का निर्माण करती है।

वैश्वीकरण के संदर्भ शिक्षा के लक्ष्य है :–

1. मानवीय मूल्यों व संस्कृति का विकास
2. विश्व नागरिकता की भावना का विकास
3. शिक्षा प्राप्ति के लिये अनुशासन कायम रखने हेतु नये–नये दृष्टिकोण अपनाना
4. ज्ञान के नये–नये अवसर छात्र–छात्राओं को देना।
5. नई तकनीकी प्रयोग में लाकर शिक्षा देना
6. सभी राष्ट्रों के विज्ञान, तकनीकी तथा आर्थिक विकास के क्षेत्र में सम्बन्धित ज्ञान का विश्व स्तर पर आदान–प्रदान करना और एक–दूसरे के अनुभवों से लाभान्वित होना।

आज ज्ञान के उभरते क्षेत्रों से सम्बन्धित कोर्सों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इन कोर्सों में शिक्षा स्वतन्त्ररूप से दी जानी चाहिए। किन्तु आज विश्व मानव समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक और राष्ट्रगत वैमन्शय के कारण वैश्वीकरण के मूलतत्व एक विश्व मानव समाज'' का निर्माण कहीं खोता जा रहा है। अतः वर्तमान पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता का समावेश आवश्यक हो गया है। पाठ्यक्रम में आध्यात्मिकता के समावेश से ऐसे मानव के निर्माण का उद्देश्य पूर्ण होगा जो उदारता, सहिष्णुता तथा सामंजस्य सहानुभूति, स्नेह, भ्रातृत्व जैसे मानवीय गुणों से परिपूर्ण होगा। अतः यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि अध्यात्म आधारित पाठ्यक्रम ''सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं वसुधैव कुटुम्बकम का उद्घोष करते हुए प्राणीमात्र का कल्याण व विश्व बन्धुत्व तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की स्थापना हेतु रामबाण है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा, विकास तथा आर्थिक व्यवस्था के सुधारों के फलस्वरूप आज तकनीकी एवं वैश्वीकरण के बीच सम्बन्ध स्थापित हो रहे है।

आज जो विभिन्न राष्ट्रों में क्रिया प्रतिक्रिया हो रही है, वह अन्य सभी राष्ट्रों को एक–दूसरे के करीब ला रही है तथा यह भौगोलिक सीमा को पार कर रहे हैं। आज वैश्वीकरण का युग है। देश–विदेश के बीच की सीमा गायब होती जा रही है और पूरा संसार एक गांव सा प्रतीत हो रहा है। आज समाज में होने वाली सभी गतिविधियों को वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा जा रहा है। वैश्वीकरण का उद्देश्य राष्ट्रीय सरहदों को पार कर सम्पूर्ण विश्व को एकीकृत करना है।

वैश्वीकरण की कल्पना भारत में वैदिक युग से रही थी। आ न भद्रः क्रतवोयन्तुविश्वतः की बात कही गयी है जिसमें विश्व को सुसंस्कृत करने का संकल्प है। सर्वेन सुखीन संतु में सर्वहित की मानसिकता है। आज के वैश्वीकरण के पीछे परहितवाद नहीं है स्वार्थता है। उसमें दूसरों को लूटने की भावना है। आज हम जिस वैश्वीकरण की बात करते हैं। वह उक्त वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना के विपरित है। आज जिस वैश्वीकरण का डंका बज रहा है। वह उक्त 'वसुधैव कुटुबंक' की संकल्पना से एकदम अलग है। यह तो बाजारवाद को बढ़ावा देकर इनसानों के बीच दूरी पैदा कर रहा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक बार कहा था "मैं नहीं चाहता कि मेरा घर सब तरफ खड़ी हुई दीवारों से घिरा रहे और उसके दरवाजे और खिड़कियां बंद कर दी जाये। मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे घर के आस–पास देश–विदेश की संस्कृतियों की हवा बहती रहे। महात्मा गांधी की यह उक्ति वैश्वीकरण की अवधारणा का सार प्रस्तुत करती हैं। वैश्वीकरण की यह अवधारणा, जिसका अर्थ है कि किसी भी विशय, घटना, समस्या या सिद्धान्त को सम्पूर्ण विश्व के सन्दर्भ में देखा जाये। पर आधुनिक युग में वैश्वीकरण शब्द की अवधारणा एक नये रूप में सामने आयी है। वर्तमान युग संचार व प्रौद्योगिकी का युग है जहां पर वैश्वीकरण अपनी पूरी सक्रियता के साथ पूरे विश्व में विस्तारित होता जा रहा है और इसी वैश्वीकरण के कारण आज पूरा विश्व एक छोटी सी दुनिया में सिमट गया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने समस्त विश्व के देशों के लोगों के जीवन को बहुमुखी प्रभावित किया है।

एक वक्त था जब वैश्वीकरण की संकल्पना को आर्थिक विश्लेषण के बढ़ते हुए वैश्विक महत्व, विश्व स्तर पर बढ़ते हुए आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता था। बाद में इसमें और भी कई पहलू शामिल हो गए जैसे अन्तर्राष्ट्रीय निगम, तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग, सांस्कृतिक सहयोग, स्थानान्तरण एवं शरणार्थी समस्या तथा अमीर–गरीब देशों के संबंध आदि। इस

Scanned by CamScanner